भारत के बढ़े परोपकारी 07 | सम्राट अशोक के शिलालेख पर बनी मजार 08 | कचरा बीनने वालियों ने कमाए 1 लाख रुपये 10

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

पाथेय कण

₹10

www.patheykan.com

कार्तिक शुक्ल 8, वि.2079, युगाब्द 5124, 1 नवम्बर, 2022

मंदिर में स्थापित देव प्रतिमाएं

भारत की विदेश नीति का असर

मुस्लिम देशों में बन रहे हैं विशाल मंदिर

दुबई का नवनिर्मित मंदिर

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

विशेषांक

विशेषांक पढ़ने का अवसर मिला, विशेषांक में स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर बहुत सटीक जानकारी उपलब्ध करवाई गई है। यह पढ़कर बहुत भावुक हो गई कि किस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद जैसे शहीद की माता स्वतंत्रता के बाद भी उस सम्मान को प्राप्त नहीं कर पाई जिसकी वो हकदार थीं। पत्रिका में अनेक श्रेष्ठ लेखकों ने अपने सुन्दर विचार प्रस्तुत किए जिन्हें पढ़कर गौरव की अनूभूति होती है। आदिवासी बंधुओं ने जो त्याग-बलिदान दिया उसकी अच्छी जानकारी इस में है। पाथेय कण का मुझे बहुत इंतजार रहता है। पाथेय में ऐसी जानकारी आती है जो अन्य पत्र-पत्रिकाओं में सेकुलरिज्म के कारण नहीं छपती हैं। पत्रिका पढ़कर मुझे खुशी की अनुभूति होती है।

-मंजू चौहान, पीलवा, नागौर

सामाजिक समरसता

'वाल्मीकि बेटी का राजपुरोहित परिवार ने अपने घर के आंगन में कराया विवाह' उक्त समाचार 1अक्टूबर के अंक में पढ़ा। लोग हिन्दू समाज को तोड़ने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, ऐसे में समाज में आपसी प्रेमभाव साधे रखने के लिए जालोर जिले के सांकरणा गांव के सुरेश राजपुरोहित ने वाल्मीकि समाज की बेटी का विवाह अपने घर में कराकर समाज में एक मिसाल पेश की है।

-रावताराम मेघवाल, रेवदर, सिरोही

बाल जगत

1अक्टूबर वाले अंक में कई गाथाएँ पढ़ी। बाल पृष्ठ में विशेष बोधकथा 'ट्रेन की जंजीर' जैसी अनसुनी कहानियां हमें अपने पूर्वजों के अतुलनीय ज्ञान का गौरव करवाती हैं और बताती हैं कि विज्ञान के लिए एकात्मता चाहिए, भौतिकता नहीं।

-श्रवण भारत, बाड़मेर

शोधपरक सामग्री

'दिवेर विजय अंक' शोध परक सामग्री के कारण अन्य सभी अंकों के समान संग्रहणीय है। 'जय महाराणा-जय मेवाड़' शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत 'गौरव कथा' में लेखक ने अब्दुल रहीम को बहुत बड़े लेखक, योद्धा के साथ-साथ कृष्ण भक्त भी बताया है। मेरे विनम्र मत में रहीम को कृष्ण भक्त कहना कृष्ण भक्तों की भावना को आहत करना होगा। कोई भी कृष्ण भक्त असत्य और अधर्म के पक्ष में विधर्मी शासक की सेना का नेतृत्व करते हुए मेवाड़ व वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के विरुद्ध लड़ने के लिए कैसे आ सकता है? रहीम को कुछ रचनाओं के कारण रहीम दास व कृष्ण भक्त कहना उचित नहीं है।

-डॉ.राधेश्याम अग्रवाल, अजमेर

आपणी बातां

मैं पाथेय कण का 15 वर्षों से पाठक हूँ। समाज और राष्ट्र जागरण के आपके प्रयासों का हृदय से साधुवाद ज्ञापित करता हूँ। पिछले कुछ समय से अपने नवोन्मेषी 'आपणी बातां' कॉलम में राजस्थानी लेख को शुरु किया उसके लिए आपको अनेकानेक धन्यवाद, साधुवाद, आभार। डॉ. कसाना को भी पिछले सभी लेखों में प्रस्तुत विशिष्ट विचारों के लिए बधाई। अच्छा हो, राजस्थानी भाषा की कविता के लिए भी कुछ स्थान आपकी पत्रिका में हो।

-मनमोहन दाधीच, वीआईपी कालोनी, उदयपुर

मुख पृष्ठ

पाथेय कण का 1अक्टूबर का अंक पढ़ा। अंक का मुख पृष्ठ बहुत सुंदर लगा। क्रांतिकारी अशफाक उल्ला का जीवन प्रसंग प्रेरणादायक लगा। अंक के लिए अन्य स्तंभ भी सारगर्भित जानकारी युक्त हैं। नवीन जानकारी से युक्त पाथेय कण में उपरोक्त स्तंभों का निरंतर प्रकाशन होता रहे।

-मनोज चित्तौड़िया, आगरा रोड़, जयपुर

सांस्कृतिक मूल्य

मैं अनेक वर्षों से पाथेय कण का नियमित पाठक हूँ। इसमें हमें राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर सकारात्मक विश्लेषण तो मिलता ही है साथ ही युवाओं के लिए कई प्रेरक प्रसंग भी पढ़ने को मिलते हैं। यह कहना भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि पाथेय कण हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को बचाएं रखने के लिए आधुनिक पीढ़ी को सुलेखों के माध्यम से जाग्रत कर रही है।

-विकास मिश्रा, प्रताप नगर, जयपुर

मेवाड़ी वीर

1 अक्टूबर का अंक मन को छूने वाला है। मुख पृष्ठ पर मेवाड़ी वीरों के अदम्य साहस को प्रकट करने वाला चित्र अच्छा लगा। दिवेर युद्ध में मुगलों पर प्रताप की विजय के जो चित्र लगे हैं वे प्रभावी लगे। आशा है भविष्य में ऐसे ही ज्ञानवर्द्धक लेख पढ़ने को मिलते रहेंगे।

-मोहित सैनी, इंद्रागांधी नगर, जयपुर

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- विजयी सैन्य शक्ति के प्रतीक 'पांच प्यारे' और पांच 'ककार'
https://patheykan.com/?p=17670
- हिन्दी में मेडिकल की पढ़ाई : एक ऐतिहासिक पहल
https://patheykan.com/?p=17749
- समाज की सज्जनशक्ति देश को समय दे
https://patheykan.com/?p=17498

आप भी लिखिए अपनी फोटो के साथ

पाथेय कण में प्रकाशित किसी समाचार/लेख या अन्य सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया/टिप्पणी या कोई सुझाव अथवा प्रकाशित सामग्री के विषय पर अपने विचार हमें अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो के साथ व्हाट्सएप या मेल करें अथवा डाक से भेजें।

79765 82011

patheykan@gmail.com

पाक्षिक
पाथेय कण

कार्तिक शुक्ल 8 से
मार्गशीर्ष कृ. 7 तक
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

1-15 नवम्बर, 2022
वर्ष : 38
अंक : 14

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने की शिकायत हेतु सम्पर्क
(प्रात:10 से सायं 5 बजे तक)
सुरेश शर्मा
9413645211
विज्ञापन हेतु सम्पर्क
ओमप्रकाश
9929722111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

मेरे-अपने भारत का अहसास

पचहत्तर वर्ष बीत गए देश को स्वाधीन हुए। पिछले 7-8 वर्षों को छोड़ दें तो शेष समय में यदाकदा ही लगा कि यह मेरा देश है, यह राम-कृष्ण-शिव का देश है, गीता-रामायण का देश है, यह महावीर-बुद्ध-नानक का देश है। यह अहसास उन वर्षों में कभी हुआ ही नहीं। सत्तारूढ़ पक्ष इफ्तार की पार्टी देता रहा, जालीदार टोपी पहनकर खुश होता रहा। 'इफ्तार-पार्टी' देने में कोई बुराई नहीं है। परंतु, कभी हरिद्वार जाकर गंगा की आरती नहीं उतारी, कभी काशी जाकर भोलेनाथ के आगे शीश नहीं झुकाया। तो, कभी लगा ही नहीं कि पाकिस्तान अलग होने के बाद रहा सहा हिंदुस्तान 'हिंदू-स्थान' है।

राम और शिव क्या किसी पंथ-मजहब के हैं? मानते होंगे कोई उन्हें अपना आराध्य देव, वे इस देश की आत्मा हैं, पहचान हैं इस देश की। उनका चरित्र लिखा है इस देश के मनीषियों ने। उनका स्तवन किया है इस देश के ऋषियों ने। वे भारत हैं। उनका आदर-सम्मान भारत का आदर-सम्मान है। इस देश के लोक हृदय में विराजमान हैं वे। इसलिए, जब 'काशी कॉरिडोर' बना और अब जब 'महाकाल लोक' का भव्य निर्माण हुआ तथा देश के प्रधानमंत्री ने दीपावली पर अयोध्या जाकर रामलला के दर्शन किए तो लगा- यह मेरा भारत है, मेरा अपना भारत, जिसका अहसास करने के लिए लोग तरस गये थे।

गुजरात में पावागढ़ स्थित काली माता मंदिर के गर्भगृह के ऊपर बना गुंबद तोड़कर जिसने भी वहां दरगाह बना दी थी, उसकी नियत क्या रही होगी, कोई भी समझ सकता है। हमारा मान-मर्दन होता रहा स्वाधीनता के 70 वर्षों तक। हमारी आराध्य देवी के सिर पर दरगाह! परन्तु अब लगता है, इस देश में आयी स्वाधीनता 'स्व-तंत्रता' की ओर बढ़ रही है। दरगाह वहां से हटाकर पूरे सम्मान के साथ दूसरी जगह स्थानान्तरित करते हुए देवी मंदिर का गुबंद फिर से बना दिया गया है और 500 वर्षों के पश्चात् वहां मंदिर पर पुनः ध्वजा लहराने लगी है। अयोध्या में रामलला का मंदिर निर्माण तो स्वप्न के साकार होने जैसी बात है।

नेताजी सुभाष बोस ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए सेना का गठन कर अंग्रेजों पर हमला कर दिया था, उनकी नेतृत्व क्षमता और अदम्य साहस को सत्ता-पक्ष ने भुलाने की ही कोशिश की। परन्तु वे तो देशवासियों के हृदय में थे। जनता ने उनकी कितनी ही मूर्तियां स्वप्रेरणा से स्थापित की थीं। अब जब उनकी भव्य प्रतिमा दिल्ली के 'इंडिया गेट' पर लगायी गई तो कौन ऐसा भारतवासी होगा जिसका हृदय हर्ष से पुलकित नहीं हुआ होगा। देश के दुश्मनों से लड़ते हुए जो बलिदान हो गए थे, ऐसे भारतीय सेना के जांबाज सैन्य अधिकारी और सैनिकों की स्मृति में बना युद्ध-स्मारक तो कब से अपने निर्माण की बाट जोह रहा था। दशम गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों जैसा बलिदान विश्व में कहीं देखने को मिला है क्या? परंतु उनके बलिदान को सम्मान अब दिया गया।

अब लगने लगा है कि धीरे-धीरे देश में 'स्वतंत्रता' आ रही है। बनी है अब भारत-केन्द्रित शिक्षा नीति। देश में स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता की बातें हो रही हैं। माना कि, लक्ष्य बहुत दूर है, परंतु जब गांव-गरीब की चिकित्सा, रोशनी, पानी, घर, रसोई के ईंधन और स्वरोजगार की चिंता सत्ता पक्ष कर रहा है तो लगता है कि कुछ कदम तो चल ही पड़े हैं- रामराज्य की ओर।

रामराज्य का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं-

'नहीं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहीं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।'

(अर्थात् रामराज्य में न कोई गरीब है, न दु:खी है और न दीन ही है। न कोई मूर्ख है और न बिना अच्छे आचरण वाला है।)

और यह भी कि-

'दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।'

(अर्थात् रामराज्य में किसी को भी शारीरिक, दैविक या भौतिक कष्ट नहीं है, सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और अपने स्वधर्म-कर्तव्य पथ पर चलते हैं)

तो ऐसा होगा रामराज्य। ऐसे ही रामराज्य को लाने की बात किया करते थे गांधी बाबा। परंतु सत्ता ने बरसों तक इसे बिसराए रखा। अब लगा है कि चले हैं कुछ कदम उस ओर।

अब कदम बढ़ चले हैं तो रुकने नहीं चाहिए। इसके लिए हम सब को भी अपने-अपने हिस्से की भूमिका निभानी होगी। सबको करने होंगे प्रयत्न, बल्कि करनी होगी प्रयत्नों की पराकाष्ठा। ●

- रामस्वरूप अग्रवाल

आबूधाबी में निर्माणाधीन मंदिर का मॉडल

भारत की विदेश नीति का असर

मुस्लिम देशों में बन रहे हैं विशाल मंदिर

पाकिस्तान तथा बांग्लादेश में मंदिर तोड़े जाने के समाचार लगातार आते रहे हैं। अफगानिस्तान में भी तालिबान द्वारा उसके पिछले कार्यकाल में बामियान स्थित भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमाएं तोड़ी गई थीं। ऐसे में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के शहर दुबई में विशाल हिंदू मंदिर का निर्माण चर्चा का विषय बना हुआ है। एक अन्य मुस्लिम देश बहरीन में भी हिंदू मंदिर प्रस्तावित है। क्या यह वर्तमान मोदी सरकार की सफल विदेश नीति का परिणाम है? कई मुस्लिम देशों ने भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को न केवल अपने देश का सर्वोच्च सम्मान दिया है, वरन् अपने घोषित मुस्लिम देश में विशाल मंदिर बनाने के लिए भूमि उपलब्ध कराने के साथ ही सब प्रकार की सुविधाएं भी प्रदान की हैं।

दुबई में बनकर तैयार हो गया है विशाल मंदिर

यद्यपि मुस्लिम देश यूएई के दुबई में हिंदुओं के लिए 'शिव-कृष्ण' का एक मंदिर पहले से ही था, जिसके लिए 1958 में शेख रशीद बिन अल मकतौम ने अनुमति दी थी, परंतु बीते दिनों एक नया विशाल मंदिर भी दुबई में बन कर तैयार हो गया है। इस मंदिर का उद्घाटन इसी 4 अक्टूबर को 'सहिष्णुता और सह-अस्तित्व' मंत्री शेख नाहयान बिन मुबारक अलनाहयान ने दीपक प्रज्वलित कर किया। यूएई में भारतीय राजदूत संजय सुधीर भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

दुबई का यह नवनिर्मित मंदिर 70 हजार वर्ग फीट में फैला है। इस मंदिर में 16 हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई हैं, इनमें राम दरबार सहित भगवान शिव, कृष्ण, गणेश, महालक्ष्मी आदि के साथ ही दक्षिण भारत में पूजे जाने वाले देवता गुरुवायूरप्पन और अयप्पन की मूर्तियां भी शामिल हैं। श्री गुरू ग्रंथ साहिब के लिए एक कक्ष की अलग से व्यवस्था की गई है। मंदिर में नौ ऊँचे-ऊँचे सफेद मार्बल के खंभे बनाए गए हैं जिन पर हाथी, घंटियों व फूलों की आकृतियां व मूर्तियां उकेरी गई हैं। काले पत्थरों पर दक्षिण भारत के देवी-देवताओं की मूर्तियों को उकेरा गया है। मंदिर निर्माण में सफेद मार्बल का प्रयोग किया गया है।

यह मंदिर दो मंजिला है, जिसकी पहली मंजिल पर तुलसी के पौधे के लिए स्थान के साथ ही नौ ग्रहों के लिए स्थान निर्धारित है। बताया जाता है कि इस वर्ष के अंत तक वहां एक विशाल कम्युनिटी सेंटर (सामुदायिक केन्द्र) बनाया जाएगा जहां हिंदू धार्मिक समारोह और पूजा पाठ आयोजन के साथ ही विवाह समारोह, नामाकरण संस्कार, जनेऊ संस्कार आदि भी हो सकेंगे।

उद्घाटन के अवसर पर भारत से 14 पंडित बुलाए गए थे जिन्होंने मंत्रोच्चार किया। दुबई के एक समाचार पत्र के अनुसार पुजारियों ने 'ओम शांति-शांति ओम' का जाप करते हुए लोगों का मंदिर में स्वागत किया। तबला और ढोलक भी बजाए गए।

अक्टूबर माह में मंदिर दर्शन के लिए पूर्व में पंजीकरण आवश्यक किया गया था ताकि एक साथ अधिक श्रद्धालु एकत्र न होने पाएं। यद्यपि अक्टूबर के पश्चात् बिना पंजीकरण के ही दर्शन कर सकेंगे। एक बार में 1000-1200 श्रद्धालु दर्शन कर सकते हैं। मंदिर के निर्माण में भारतीय वास्तुशास्त्र और अरब की संस्कृति का मेल दिखाई देता है।

बता दें कि वर्तमान में यूएई में 35 लाख भारतीय निवास करते हैं, इनमें हिंदू, सिख, ईसाइयों के साथ ही मुस्लिम भी शामिल हैं।

अबूधाबी में भी बन रहा है विशाल मंदिर

यूएई की राजधानी अबूधाबी में भी एक विशाल मंदिर के निर्माण का कार्य जारी है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदी 2015 में जब यूएई गए थे तब उन्होंने अबूधाबी में एक विशाल मंदिर के निर्माण की बात कही थी। जिसके लिए अबूधाबी के प्रिंस शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने 20 हजार वर्ग मीटर जमीन बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था को मंदिर निर्माण हेतु देने की घोषणा की थी।

इस मंदिर की आधार शिला 11 फरवरी, 2018 को स्वामीनारायण संस्थान के महंत ईश्वर चरण स्वामी ने वैदिक शिला पूजन करते हुए रखी थी तथा उसी समय दुबई के ओपेरा हाउस में भारतीय समुदाय को संबोधित करने के लिए उपस्थित प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मंदिर के मॉडल का अनावरण किया था। तब मोदी जी ने भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कहा था, ''मेरा मानना है कि यह मंदिर न केवल वास्तुकला और भव्यता की दृष्टि से अद्वितीय होगा, बल्कि दुनिया भर के लोगों को 'वसुधैव कुटुम्बकम' का संदेश भी देगा।

यह मंदिर अबूधाबी से 30 मिनट की दूरी पर हाईवे से सटे 'अबू मुरेखा' नामक स्थान पर बनाया जा रहा है, जिसके 2024 तक पूर्ण होने की संभावना है। मंदिर में शिव, कृष्ण और अयप्पा भगवान की मूर्तियां होंगी। अयप्पा को विष्णु भगवान का अवतार मानकर केरल में पूजा की जाती है। अबूधाबी में रहने वाले लगभग 60 हजार हिंदुओं को अभी विवाह, नामकरण आदि संस्कारों हेतु दुबई जाना पड़ता है। इस मंदिर के निर्माण से ये लोग अबूधाबी में ही इस तरह के समारोह व पूजा-अर्चना मंदिर परिसर में कर सकेंगे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मंदिर का डिजाइन दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर से लिया गया है। मंदिर राजस्थान और मैसेडोनिया से लाए गए गुलाबी पत्थरों और संगमरमर से बनाया जा रहा है। मंदिर में काम में आने वाले पत्थरों पर नक्काशी का काम भारत में शिल्पकारों के माध्यम से किया जा रहा है तथा उन्हें यूएई में लाकर जोड़ा जा रहा है।

मंदिर परिसर में आंगतुक कक्ष, प्रार्थना कक्ष, प्रदर्शनी स्थल, बच्चों के लिए सीखने का क्षेत्र, फूड कोर्ट, किताब व उपहार की दुकानें आदि रहेंगी। मंदिर परिसर में एक खूबसूरत बगीचा तथा मनमोहक वाटर फ्रंट भी होगा।

हाल ही में (सितंबर की शुरुआत में) भारत के विदेश मंत्री श्री एस जयशंकर यूएई में अपने तीन दिवसीय प्रवास के दौरान अबूधाबी के इस निर्माणाधीन मंदिर को देखने गए थे। श्री जयशंकर ने वहां गणेश चतुर्थी मनाई तथा मंदिर साइट पर भक्तों व कार्यकर्ताओं से भेंट की।

बहरीन के क्राउन प्रिंस और स्वामीनारायण संस्था के स्वामी मंदिर निर्माण के संबंध में चर्चा करते हुए

बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था

इस संस्था का पूरा नाम बोचासनवासीश्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था है। यह 1907 में स्थापित एक सामाजिक-आध्यात्मिक हिंदू संगठन है जो दुनिया भर में एक हजार एक सौ से अधिक मंदिरों तथा सांस्कृतिक परिसरों का संचालन करता है। अबूधाबी तथा बहरीन में मंदिर निर्माण के लिए इसी संस्था को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

बहरीन में मंदिर के लिए दी गई भूमि

बहरीन ऐसा दूसरा मुस्लिम देश है जहां भी एक विशाल मंदिर बनने जा रहा है। बहरीन के शाही परिवार ने इसके लिए जमीन दान में दी है। मंदिर का निर्माण बीएपीएस स्वामी नारायण संस्था द्वारा कराया जाएगा। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस पल को ऐतिहासिक बताया है।बहरीन के क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री सलमान बिन हमाद अल खलीफा और बीपीएस स्वामीनारायण संस्था के पूज्य ब्रह्मविहारी स्वामी के मध्य इस संबंध में आवश्यक चर्चा हुई है। स्वामी जी ने क्राउन प्रिंस द्वारा मंदिर के लिए जमीन दी जाने पर उनका आभार जताया है।

देश विरोधी ताकतें हैं परेशान

मुस्लिम देशों में हिंदू मंदिर बनने का समाचार देश विरोधी तत्वों तथा कट्टरपंथियों को हजम नहीं हो रहा। ये लोग भूल जाते हैं कि आज देश में एक मजबूत सरकार है। आज प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत विश्व में सम्मानजनक पहचान बना रहा है। यह भारत की विदेश नीति की सफलता भी है। ●

पाकिस्तान व बांग्लादेश में मंदिर-गुरुद्वारों की दुर्दशा

यूएई, बहरीन आदि देशों में भले ही मंदिर बन रहे हों, भारत से टूटकर बने पाकिस्तान में हिंदू-सिक्खों के प्रति दुर्व्यवहार कम होने का नाम नहीं ले रहा। पाकिस्तान की संसद (नेशनल असेंबली) में बोलते हुए डॉ. रमेश वांकवानी ने कहा कि पाकिस्तान में यद्यपि 1288 मंदिर तथा 521 गुरुद्वारें हैं, परंतु उनमें से मात्र 31 मंदिर व गुरुद्वारे ही चालू हैं। (पंजाबी अखबार 'अजीत' दिः 22.10.22 के अनुसार)

बांग्लादेश में भी बड़ी संख्या में हिंदू मंदिरों में तोड़फोड़ की जाती रही है। 2021 में दुर्गापूजा उत्सव के दौरान हिंदुओं के प्रति भड़की हिंसा में 70 मंदिरों में तोड़फोड़ की गई।

इस वर्ष भी इसी अक्टूबर माह में बांग्लादेश के झेनाइदाह जिले के दौतिया गांव में काली मंदिर की मूर्तियां तोड़ने का समाचार मिला है।

भारत माता के समक्ष पुष्पार्चन कर बैठक का शुभारंभ करते सरसंघचालक जी तथा मंचासीन सरकार्यवाह जी

प्रयागराज में संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल बैठक सम्पन्न

देश में जनसंख्या विस्फोट चिंताजनक है
सब पर लागू होने वाली जनसंख्या नीति बननी चाहिए

जनसंख्या असंतुलन, मतांतरण, महिला सहभागिता, आर्थिक स्वावलंबन, मातृभाषा में शिक्षा, सामाजिक समरसता, सेवा कार्य, परिवार प्रबोधन, पर्यावरण और समाज के सभी वर्गों के साथ संवाद जैसे विषयों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में पिछले दिनों विचार मंथन हुआ। यह विचार मंथन 16 से 18 अक्टूबर तक हुई अ.भा.कार्यकारी मण्डल की बैठक में किया गया जो उ.प्र. के प्रयागराज में सम्पन्न हुई। अगस्त 2022 दिल्ली में आयोजित 'सुयश' कार्यक्रम और 'ज्वॉइन आरएसएस' (ऑनलाइन) के माध्यम से संघ से बड़ी संख्या में जुड़ने को आतुर युवा आदि विषय भी चर्चा में रहे।

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की 'अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल' की बैठक रीति-नीति के निर्धारण की दृष्टि से अहम होती हैं। बैठक में संघ रचना के सभी 45 प्रांतों के प्रांत संघचालक, कार्यवाह, प्रचारक, उनके सहायक तथा ऊपर के सभी पदाधिकारी एवं अन्य अखिल भारतीय अधिकारियों सहित कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त समान विचारधारा वाले संगठनों के प्रमुख कार्यकर्ता भी इसमें बुलाए जाते हैं। बैठक में देशभर से आए 377 प्रतिनिधियों ने सहभाग किया।

संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर ने बताया कि बीते मार्च माह में आयोजित अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (11 से 13 मार्च, कर्णावती) में बनी वार्षिक योजना की समीक्षा हुई तथा संघ कार्य के विस्तार का वृत्त लिया गया। देश में वर्तमान समय में चल रहे समसामयिक विषयों तथा सरसंघचालक द्वारा विजयादशमी उद्बोधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। इसके अलावा नागपुर में 14 नवम्बर से 8 दिसम्बर, 2022 के बीच होने वाले संघ शिक्षा वर्ग (तृतीय वर्ष) जो इस वर्ष मई के अलावा आयोजित हो रहा है, उसकी योजना तथा संघ के शताब्दी वर्ष में कार्य विस्तार की रूपरेखा पर चर्चा की गई।

शुरुआत श्रद्धांजलि से

बैठक के प्रारंभ में गत दिनों दिवंगत हुए समाज जीवन में सक्रिय प्रमुख व्यक्तियों यथा द्वारका पीठ के पूज्य शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी सरस्वती, पंचपीठाधीश्वर आचार्य धर्मेंद्र जी महाराज, पूर्व न्यायाधीश आरसी लाहोटी, हास्य कलाकार श्री राजू श्रीवास्तव, प्रसिद्ध उद्योगपति सायरस मिस्री, पुरातत्वविद श्री बीबी लाल, श्री मुलायम सिंह यादव आदि को श्रद्धांजलि दी गई।

पूर्वोत्तर में बढ़ी स्वीकार्यता

बैठक के अंतिम दिन पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए श्री होसबाले ने बताया कि पूर्वोत्तर राज्यों के जनजातीय समुदाय

मार्च 2024 तक सभी मंडलों में होगा शाखाओं का विस्तार

- **वर्तमान में देशभर में 61045 संघ शाखाएँ**
- **वर्ष 2024 के अंत तक हिंदुस्तान के सभी मंडलों में संघ शाखाएँ पहुँचाने की योजना**
- **कुछ प्रांतों में यह कार्य चुनिंदा मंडलों में 99% तक पूर्ण**
- **पिछले एक वर्ष में लगभग 6663 संघ शाखाएं बढ़ीं**
- **चित्तौड़, ब्रज व केरल प्रांत में मंडल स्तर तक खुल चुकी हैं संघ शाखाएं**
- **विगत एक वर्ष में साप्ताहिक मिलन में 4000 एवं मासिक संघ मंडली में 1800 की बढ़ोतरी**

(नोट- आंकड़े प्रयागराज में 16-19 अक्टूबर, 2022 को आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल बैठक के बाद सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी की प्रेसवार्ता से लिए गए हैं।)

के लोगों में भी स्वाभिमान जागरण के कारण 'मैं भी हिन्दू हूँ' का बोध विकसित हुआ है। पूर्वोत्तर राज्यों के जनजातीय समुदाय के लोग अब संघ से जुड़ना चाहते हैं। मेघालय और त्रिपुरा राज्य के जनजाति समुदाय के लोग संघ के सरसंघचालक जी को इस बोध के साथ आमंत्रित करने लगे हैं। ज्ञात हो कि सरसंघचालक जी ने इसी सितम्बर माह में मेघालय की यात्रा की थी। इस यात्रा में खासी, जयंतिया व गारो जनजाति समाज के लोगों द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया था। यात्रा के दौरान डॉ.भागवत ने सेंग-खासी समुदाय के पारंपरिक धार्मिक स्थल के दर्शन किए थे।

संघ कार्य की प्रगति

संघ अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में बहुत से आयामों में कार्य को गति प्रदान कर रहा है। कोरोना की विभीषिका के कठिन समय में भी संघ ने अपने कार्यों के आयामों में अभूतपूर्व प्रगति की है।

जनसंख्या असंतुलन पर चिंता

देश में जनसंख्या विस्फोट चिंताजनक है। इसलिए इस विषय पर समग्रता से व एकात्मता से विचार करके सब पर लागू होने वाली जनसंख्या नीति बननी चाहिए। मतांतरण होने से हिन्दुओं की संख्या कम हो रही है। देश के कई हिस्सों में मतांतरण की साजिश चल रही है। कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ भी हो रही है। जनसंख्या असंतुलन के कारण कई देशों में विभाजन की नौबत आई है। भारत का विभाजन भी जनसंख्या असंतुलन के कारण हो चुका है।

चिंता यह भी

जनसंख्या असंतुलन से संबंधित एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि विगत 40-50 वर्षों से जनसंख्या नियंत्रण पर जोर देने के कारण प्रत्येक हिंदू परिवार की औसत जनसंख्या 3.4 से कम होकर 1.9 हो गई है। इसके चलते भारत में एक समय ऐसा आएगा, जब युवाओं की जनसंख्या कम हो जाएगी और वृद्ध लोगों की आबादी अधिक होगी, अतः भारत को युवा देश बनाए रखने के लिए जनसंख्या को संतुलित रखने की आवश्यकता है। मतांतरण और बाहरी घुसपैठ जैसे दुष्चक्र के कारण होने वाला जनसंख्या असंतुलन भी चिंताजनक है।

एक वर्ष में बढ़ी 6 हजार से अधिक संघ शाखाएं

वर्ष 2024 के अंत तक देश के सभी मंडलों (7-8 गांवों को मिलाकर बनता है एक मण्डल) में शाखा पहुंचाने की योजना बनाई गई है। कुछ प्रांतों ने यह कार्य चुनिंदा मंडलों में 99 प्रतिशत तक पूरा कर लिया है। चित्तौड़, ब्रज व केरल प्रांत में मंडल स्तर तक शाखाएं खुल गई है। पहले देश में 54 हजार 382 संघ की शाखाएं थीं, वर्तमान में 61 हजार 45 शाखाएँ लग रही हैं। यानि एक वर्ष में लगभग 6 हजार 663 संघ शाखाएं बढ़ी हैं। साप्ताहिक मिलन में 4 हजार और मासिक संघ मंडली में विगत एक वर्ष में 1 हजार 800 की बढ़ोतरी हुई है।

देशभर में निकले तीन हजार शताब्दी विस्तारक

वर्ष 2025 में संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस निमित्त संघ कार्य हेतु समय देने के लिए देशभर में तीन हजार युवक शताब्दी विस्तारक के नाते निकले हैं। अभी एक हजार शताब्दी विस्तारक और निकलने हैं। ●

सेवा रत्न पुरस्कार से सम्मानित किए गए रतन टाटा एवं चलासनी बाबू राजेन्द्र प्रसाद

सेवा भारती ने गत 8 अक्टूबर को उन लोगों को एक भव्य सम्मान समारोह में सम्मानित किया जिन्होंने निःस्वार्थ समाज सेवा के लिए अपनी कमाई अर्पित की। समाज सेवा के उल्लेखनीय कार्य हेतु श्री रतन टाटा एवं चलासनी बाबू राजेन्द्र प्रसाद को संयुक्त रूप से 'सेवा रत्न' पुरस्कार सहित 24 अन्य दानवीरों को 'सेवा भूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस हेतु नई दिल्ली के डॉ.अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में समारोह आयोजित किया गया था। पुरस्कार उत्तराखंड के राज्यपाल ले.ज. (से.नि.) गुरमीत सिंह ने दिए।

सेवा भूषण से सम्मानित किए जाने वाले दानवीरों में शामिल हैं- सीबीआर प्रसाद, विजयवाड़ा, समता फाउंडेशन, मुंबई (अजंता फार्मा), अमूल, श्यामसुंदर अग्रवाल (मिल्क फूड्स), यामानी जयपुरिया (कॉस्मो ग्रुप), अशोक अग्रवाल (ग्लोब कैपिटल), रोशनी नादर, रघुपति सिंघानिया (जेके ग्रुप), सूर्य फाउंडेशन, निगमघाट आदि। सेवा क्षेत्र में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करने वाली लगभग 500 चयनित सेवा विभूतियों को भी कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था।

इस अवसर पर सेवा भारती के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में दान को बड़ा महत्व दिया गया है और दान करने वालों को बहुत पुण्य का भागी माना गया है। सेवा भारती 'नर सेवा-नारायण सेवा' को अपना ध्येय वाक्य मानकर जन कल्याण के कार्यों में अनवरत लगी हुई है। कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री, पूज्य संत, संघ के पदाधिकारियों सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

वर्तमान भारत के बड़े परोपकारी - दानी

78 लोगों ने दिया 20 करोड़ से ज्यादा एक वर्ष में

भारत में परोपकार के लिए दान देने की परंपरा बहुत पुरानी है। भारत भूमि हमेशा से ही परोपकारियों की भूमि रही है। ऋषि दधीचि, राजा बलि, कर्ण और सम्राट हर्षवर्धन की ख्याति तो दानवीरों की रही है। व्यापारी वर्ग भी अपने मुनाफे का कुछ प्रतिशत 'धर्मार्थ' हेतु निकालता रहा है।

आज के सबसे बड़े दानी हैं- शिव नादार

वर्तमान समय में भी भारत में दानदाताओं की कमी नहीं है। भारत के बड़े दानदाताओं को दुनिया के सामने लाने के लिए 'एडेलगिव हुरुन इंडिया' की ओर से भारत के ऐसे परोपकारियों की सूची जारी की जाती है जो एक वर्ष में 5 करोड़ रुपये या ज्यादा का दान करते हैं। वर्ष 2021-22 की सूची में सबसे ऊपर नाम है एचसीएल के शिव नादार का, जिन्होंने 1 हजार 161 करोड़ रु. का वार्षिक दान दिया। अजीम प्रेम जी (विप्रो) ने 484 करोड़ रुपये (दूसरे स्थान पर) तथा गौतम अडानी ने 190 करोड़ रुपये (सातवें स्थान पर) दान दिया।

15 व्यक्तियों ने 100 करोड़ रु. से ज्यादा का दान दिया। 20 व्यक्तियों ने 50 से 100 करोड़ रु. तक। 43 व्यक्तियों ने 20 से 50 करोड़ रु. तक दान दिया। इस सूची में 6 महिलाएं भी है जिनमें शामिल हैं रोहिणी नीलेकणी (120 करोड़ रु.), लीना गांधी (21 करोड़ रु.) और अनु आगा (20 करोड़ रु.)।

अनुसूचित जाति के हितों पर डाका बर्दास्त नहीं–विहिप

मिशनरी व मौलवियों द्वारा मतांतरित अनुसूचित समाज को आरक्षण का लाभ दिलाने की मांग न केवल संविधान विरोधी और राष्ट्र विरोधी है अपितु अनुसूचित जाति के अधिकारों पर खुला डाका है। विहिप इस मांग के विरोध में राष्ट्रव्यापी जन जागरण अभियान चलाएगा। यह कहना है विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता विजय शंकर तिवारी का। वे गत 19 अक्टूबर को विश्व हिंदू परिषद् द्वारा आयोजित एक पत्रकार वार्ता को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मिशनरी व मौलवी बार–बार यही दोहराते हैं कि उनके धर्म में जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है और उनका धर्म स्वीकार करने के बाद कोई पिछड़ा नहीं रह जाता है। ऐसे में जब वे आरक्षण की मांग करते हैं तो न केवल उनका समानता का दावा खोखला सिद्ध होता है अपितु उनकी मंतातरण की योजना का भी भेद खुलता है। उनका उद्देश्य न्याय दिलाना नहीं अपितु मतांतरण की प्रक्रिया को तेज करना है। यह अनुचित मांग न केवल सामाजिक न्याय अपितु संविधान की मूल भावना के विपरीत किया गया एक षड्यंत्र है।

उन्होंने बताया कि 1932 में पूना पैक्ट (समझौता) के समय डॉ. अंबेडकर और महात्मा गांधी ने अनुसूचित जाति के लिए आरक्षण पर सहमति व्यक्त की थी। दुर्भाग्य से 1936 से ही मिशनरी और मौलवी मतांतरित अनुसूचित समाज के लिए आरक्षण की मांग संसद तक निरंतर उठाते रहे हैं, जिसे गांधीजी और डॉ. अंबेडकर ने अनुचित ठहराया था। संविधान सभा में भी इस मांग को अनुचित ठहराया गया। उसके पश्चात् जब इस मांग को पुनः उठाया गया तो अंबेडकर जी ने इसे देश विरोधी सिद्ध करते हुए ठुकरा दिया था। उन्होंने आरोप लगाते हुए बताया कि बार–बार ठुकराने के बाद भी उनकी निरंतरता यह सिद्ध करती है कि उनके पीछे धर्मांतरण करने वाली अंतर्राष्ट्रीय शक्तियां काम कर रही हैं।

श्री तिवारी ने बताया कि 1985 में 'सुसाइ व अन्य विरुद्ध भारत सरकार' मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट निर्देश दिया था कि मतांतरित अनुसूचित जाति को आरक्षण की मांग संविधान की मूल भावना के विपरीत है। इसके बावजूद 2004 में एक बार फिर से न्यायपालिका में गए जो अभी तक लंबित है।

विहिप प्रवक्ता ने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर इस अन्यायपूर्ण मांग को स्वीकार कर लिया जाता है तो इससे अवैध धर्मांतरण की गतिविधियां तीव्र हो जाएंगी तथा 'छद्म ईसाई' खुलकर सामने आएंगे। जनसंख्या असंतुलन के खतरे बढ़ जाएंगे और जिस अनुसूचित जाति के लिए आरक्षण का प्रावधान किया है वे इससे वंचित हो जाएंगे।

वाल्मीकि समाज उतरा विरोध में

वाल्मीकि महासभा के अध्यक्ष व पूर्व न्यायाधीश पवन कुमार ने चेतावनी देते हुए कहा कि अनुसूचित जाति के अधिकारों को लेकर किया जा रहे अनुचित प्रयास सफल नहीं होने देंगे। ●

प्रेस वार्ता से पहले विहिप के मुख पत्र 'हिंदू विश्व' के दीपावली विशेषांक का विमोचन विहिप (जयपुर) के संगठन मंत्री श्री राधेश्याम, संघ के क्षेत्रीय प्रचार प्रमुख श्री महेंद्र सिंघल, विहिप के संरक्षक श्री जुगल किशोर, राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विजय शंकर तिवारी व प्रांत संगठन मंत्री (भारत संस्कृत परिषद) के श्री कुलदीप शर्मा ने किया।

सम्राट अशोक के शिलालेख पर बना दी मजार

अफगानिस्तान में भगवान बुद्ध की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा को तालिबान ने विस्फोटक लगाकर उड़ा दिया था। ऐसे विध्वंसक तालिबानी मानसिकता के लोग भारत में क्या कम हैं? बिहार के रोहतास जिले की चंदन (कैमूर) पहाड़ी की गुफाओं में सम्राट अशोक के 2 हजार साल पुराने शिलालेख को मिटाकर मजार बना दी गई है।

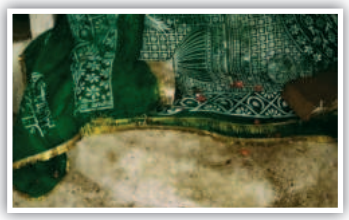

रोहतास जिले के सासाराम शहर के नजदीक स्थित पहाड़ी पर प्राचीन ब्राह्मी लिपि में सम्राट अशोक द्वारा समाजिक–धार्मिक सौहार्द के संदेश वाला शिलालेख लगाया गया था। ऐसे शिलालेख देशभर में मात्र आठ ही हैं।

शिलालेख भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा संरक्षित था। एएसआई की ओर से जिला प्रशासन को 2008 से ही लगातार 20 पत्र लिखकर उक्त पहाड़ी पर मजार संबंधी अवैध निर्माण की जानकारी दी जाती रही है। बताया जाता है कि जिला मजिस्ट्रेट द्वारा अतिक्रमण हटाने के आदेश दिए गए थे। न तो मोहर्रम कमेटी ने इन आदेशों की चिंता की और न ही प्रशासन ने अतिक्रमण हटाने पर ध्यान दिया। परिणामतः वहाँ एक बड़ा भवन तक बन गया है। तालिबानी मानसिकता वाले लोगों ने पुरातत्व महत्व के प्राचीन शिलालेख पर सफेद चुना पुतवा दिया तथा उस पत्थर पर हरी चादर ओढाकर किसी सूफी संत की मजार घोषित कर दी। अब तो वहां सालाना उर्स का आयोजन हो रहा है। मुसलमानों के साथ ही हिंदू भी वहां मत्था टेकने आते हैं।

एएसआई की अधीक्षक गौतमी भट्टाचार्य बताती हैं कि यह शिलालेख वर्ष 1917 में संरक्षित घोषित कर अधिग्रहित किया गया तथा एएसआई के संरक्षण संबंधी बोर्ड भी वहां लगाया गया था। परंतु 2010 में इस बोर्ड को उखाड़कर फेंक दिया गया। ब्राह्मी लिपि के जानकार बताते है। कि शिलालेख की पहली पंक्ति में संदेश लिखा था– 'जंबूद्वीप भारत के सभी धर्मों के लोग सहिष्णुता से रहें।'

भारत की परिवार व्यवस्था एवं जीवन मूल्यों के प्रति विश्व में बढ़ रहा है आकर्षण

विश्व में हिंदू विचार तीव्र गति से प्रभावी होता जा रहा है, साथ ही भारत का गौरव भी पुनः स्थापित हो रहा है। भारत की परिवार व्यवस्था एवं जीवन मूल्यों के प्रति विश्व में आकर्षण बढ़ रहा है। किंतु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इन व्यवस्थाओं को और अच्छे से संजोकर नई पीढ़ी को देवें। उक्त उद्गार संघ की क्षेत्रीय कार्यकारणी के सदस्य श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने बीती 16 अक्टूबर को मेड़ता सिटी में व्यक्त किए।

वे राजस्थान क्षेत्र के महाविद्यालय विद्यार्थियों के संघ शिक्षा वर्ग (प्रथम वर्ष) के समापन समारोह के मुख्य वक्ता थे। इस 20 दिवसीय शिविर में 164 (चित्तौड़ प्रांत 55, जयपुर प्रांत 56,जोधपुर प्रांत 53) शिक्षार्थियों ने संघ की कार्यशैली, देशसेवा का संकल्प और प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उन्होंने कहा कि अमेरिका में न केवल मंदिरों की संख्या बढ़ी है, अपितु सड़कों के नाम भी हिंदू देवताओं के नाम पर रखे जा रहे हैं। विश्व के कई देशों में दीपावली मनाई जा रही है। कनाडा में नवम्बर माह 'हिंदू आध्यात्मिक स्मृतियों' को समर्पित किया गया है।

आज योग एवं ध्यान के महत्व के विषय में मानव समाज समझने लगा है। विश्व के अनेक शोधकर्ताओं ने पाया कि प्रकृति के निकट रहकर मनुष्य सुखी होता है। अतः पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है।

देश में आतंकी, असामाजिक व अराजक शक्तियां बढ़ रही हैं। विभाजनकारी संगठन सक्रिय होकर समाज में विघटन पैदा कर रहे हैं। पहले गांवों में सुरक्षा की दृष्टि से अनजान व्यक्ति से पूछताछ की सुचारू व्यवस्था थी। वर्तमान समय में भी हमें सामाजिक स्तर पर सुरक्षा के लिए सतर्क होना होगा।

उन्होंने आह्वान किया कि हम सभी ईश्वर प्रदत्त जलाशय, देवस्थान, व दाह-संस्कार स्थल के उपयोग में भेदभाव छोड़कर समरसता का व्यवहार करें। पूर्वजों द्वारा चूक का परिमार्जन करने का दायित्व हमारा है।

कार्यक्रम में कबीर आश्रम, बासनी के संत रामविलास जी महाराज ने कहा कि संघ कार्य की आज के समय में समाज को महती आवश्यकता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उद्योगपति एवं समाज सेवी श्री दीनदयाल अग्रवाल एवं वर्गाधिकारी सेवानिवृत्त कर्नल सुरेश कुमार जांगिड़ थे। ●

ज्वाइन बजरंग दल
अभियान का शुभारंभ

देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा हेतु देश भर के युवा अपना सक्रिय योगदान कर सकें इसी उद्देश्य को लेकर विश्व हिन्दू परिषद ने 'ज्वाइन बजरंग दल' अभियान का शुभारंभ किया है। शुभारंभ करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने कहा कि अब लाखों हिन्दू युवाओं को बजरंग दल से जुड़ने के लिए उन्हें घर बैठे सारी सुविधाएं मिल सकेंगी।

इसके लिए 15 से 35 वर्ष आयु वर्ग के हिन्दू युवा विहिप की वेबसाइट **www.vhp.org** पर जाकर 'ज्वॉइन बजरंग दल ऑइकन' को क्लिक कर अपनी जानकारी भरें। इसके बाद बजरंग दल के कार्यकर्ता आवेदक से यथाशीघ्र सम्पर्क कर उनकी रुचि, योग्यता तथा समय की उपलब्धता के आधार पर राष्ट्र-धर्म के कार्यों से उन्हें जोड़ने का प्रयास करेंगे।

बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक नीरज दोनेरिया ने बताया कि सेवा, सुरक्षा व संस्कार के ध्येय वाक्य पर बने बजरंग दल द्वारा अब 'देव-भक्ति से देश-भक्ति','महिला सम्मान से राष्ट्रीय स्वाभिमान' तथा 'पलायन नहीं पराक्रम' के मंत्रों पर भारत के युवकों को आगे लाते हुए साहस, शौर्य और पराक्रम के साथ उनके शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक क्षमता के विकास हेतु उन्हें प्रशिक्षित किया जाएगा।

सेवा भारती की सार्थक पहल

अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)

कचरा बीनने वाली सेवा बस्ती की युवतियों ने करवा चौथ पर मेंहदी लगाकर कमाए एक लाख रुपये

सेवा भारती द्वारा देश भर में सेवा के साथ-साथ मातृशक्ति को स्वावलंबी बनाने हेतु स्वरोजगार का निशुल्क प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने तथा बच्चों को संस्कारित करने के लिए कई प्रकार के प्रकल्प पिछड़ी बस्तियों में इस समय चल रहे हैं।

अनूपगढ़ इकाई द्वारा बीती करवा चौथ (13 अक्टूबर) को सेवा बस्ती की कचरा बीनने वाली युवतियों को आस-पास के परिवारों में मेंहदी लगाने के लिए प्रेरित किया गया। प्रशिक्षण से लेकर काम दिलवाने तक की इस योजना में जहाँ हाथों में मेंहदी ने सुंदर रंग भरे वही इन सेवा बस्ती की बहिनों ने अपनी मेहनत से अच्छी कमाई कर अपने परिवार को सबल होने का अहसास भी कराया। आत्मविश्वास से भरी इन युवतियों का पालिका अध्यक्ष प्रियंका बैलान ने मनोबल बढ़ाते हुए स्वयं भी मेंहदी लगवाई और प्रशंसा करते हुए कहा कि सेवा भारती के इस पुनीत और प्रेरणादायक कार्य में शहरवासियों को भी सार्थक सहयोग करना चाहिए।

प्लास्टिक थैली का विकल्प कराया उपलब्ध

मात्र 4 रुपये में कपड़े के थैले तैयार कर अनूपगढ़ की सेवा भारती, पिछड़ी बस्ती की महिलाओं को न केवल आत्मनिर्भर बनाने हेतु कार्यरत है। वरन् सिंगल यूज प्लास्टिक जो कि पर्यावरण के लिए अत्यंत खतरनाक है, का विकल्प भी उपलब्ध करा रही है जो एक अच्छी पहल है।

सेवा भारती तहसील के अध्यक्ष श्री रामरतन गुप्ता ने बताया कि पिछड़ी बस्ती की अधिकतर महिलाएं व बच्चे कचरा बीनने तथा भीख मांगने का कार्य करते थे। कुछ समय पूर्व संस्कार केन्द्र पर बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गई तो बच्चों ने भीख मांगना छोड़कर पढ़ना शुरु किया। आज स्थिति यह है कि इन संस्कार केन्द्रों से निकले बच्चे अनूपगढ़ के प्राइवेट विद्यालयों में अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वहीं बस्ती की महिलाएं जो पहले कचरा बीनने का कार्य करती थी अब वे स्वयं का रोजगार कर रही हैं।

जोधपुर

मातृत्व के लिए जीजाबाई, नेतृत्व के लिए लक्ष्मीबाई और कृतित्व के लिए अहिल्याबाई होल्कर के जीवन से प्रेरणा लेकर मातृशक्ति आगे बढ़े

राष्ट्र सेविका समिति का द्विधारा संचलन

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने हेतु की गई है। इसका उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को सक्षम बनाना है। इसके लिए समिति ने तीन आदर्श रखे हैं- मातृत्व के लिए जीजाबाई, नेतृत्व के लिए लक्ष्मीबाई और कृतित्व के लिए अहिल्याबाई होल्कर का प्रेरणादायी जीवन चरित्र। यह कहना है राजस्थान क्षेत्र की क्षेत्र कार्यवाहिका प्रमिला शर्मा जी का। गत 16 अक्टूबर को वे जोधपुर विभाग द्वारा निकाले गए सेविका समिति के पथ संचलन के बाद कार्यक्रम को सम्बोधित कर रही थीं। संचलन का शहरवासियों ने स्थान-स्थान पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। संचलन में बिलाड़ा, फलोदी, मथानिया, शेरगढ़, पीपाड़, बोरूंदा, ओसिंया, केरू, चोखा और बालेसर से 1150 बहनों ने सहभागिता की।

उम्मीदों का नया सवेरा तेलंगाना का किशोरी विकास केन्द्र

हैदराबाद के अमीरपेट रेल्वे स्टेशन की एक बैंच पर बैठी डरी सहमी दुबकी हुई पंद्रह वर्षीय एक बच्ची और आंखों में असीम वेदना लिए उसकी मां को देखकर स्टेशन पर किसी कार्य से आई तेलंगाना सेवा भारती की सचिव जयप्रदा दीदी ने उनसे बात की। पता चला कि एक मलिन बस्ती में रहने वाली इस किशोरी को एक ऑटो चालक जबर्दस्ती उठा ले गया था ओर दो दिन बाद यहां छोड़कर चला गया। ऐसी बच्चियों की मदद कैसे की जाय, इस प्रश्न के उत्तर में निकला 'किशोरी विकास केन्द्र' का विचार, जिसे राष्ट्रीय स्वंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के सहयोग से सेवा भारती ने कार्यरूप में परिणित किया।

ऐसे हैं विकास केन्द्र

दक्षिण मध्य क्षेत्र के क्षेत्र सेवाप्रमुख चंद्रशेखर एक्का बताते हैं कि प्रतिदिन 2 घंटे चलने वाले इन केंद्रों में स्कूल का होमवर्क कराने के साथ-साथ हेल्थ अवेयरनेस, सेल्फ डिफेंस के साथ ही आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई, कढ़ाई व त्यौहारों में मूर्तियों का निर्माण जैसी वोकेशनल ट्रेनिंग भी दी जाती है। ये केंद्र किशोरियों को जीवन के हर पहलू से अवगत कराते हैं। उन्हें वो सिखाया जाता है जो परिवार के लोग भी नहीं सिखा पाते। गुड व बैड टच में फर्क करना, समाज में कैसे साहस के साथ मुश्किलों से लड़ना, अपनी रक्षा स्वयं करना आदि सिखाया जाता है। पढ़ाई के साथ न सिर्फ अच्छे संस्कार बल्कि देश भक्ति का भाव भी जागृत किया जाता है। ट्यूशन सेंटर जैसे दिखने वाले ये केंद्र एक ऐसी सशक्त नारी का निर्माण कर रहे हैं जो अपने देश से प्यार करती है व समाज की भी चिंता करती है।

केन्द्र की उपलब्धि

- हैदराबाद में प्रतिवर्ष 'रन फॉर ए गर्ल चाईल्ड' के नाम से फिटनेस कार्यक्रम आयोजित कर पूरे समाज को इन किशोरियों की समस्याओं से अवगत कराया जाता है।
- टीम ने अकेले कोरवानी टांन्डा में 20 से अधिक बच्चियों के बाल विवाह रुकवाए।
- सेवा भारती के सहयोग से किशोरियों को आई.टी की ट्रेनिंग दी जा रही है।
- किशोरी विकास केंद्र ने बच्चियों को तो सक्षम व आत्मनिर्भर बनाया ही, पूरी बस्ती की सोच भी बदली। कभी शराब में डूबे रहने वाले युवाओं ने शराब और जुआ छोड़ दिया एवं स्वयं पहल कर केंद्र के लिए टीन शेड का निर्माण किया। बस्ती के युवा अब यहां एक मंदिर बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। वर्तमान में इन किशोरी विकास केन्द्रों की संख्या 293 तक पहुँच गई है। जिन बस्तियों में सेवा भारती के बाल संस्कार केन्द्र चल रहे हैं, सामान्यतया वहीं किशोरी विकास केन्द्र भी खोले जा रहे हैं। ●

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –

सामान्य– यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ–** यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम –** यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर लिखी पुस्तक 'इंडियन स्ट्रगल' के लेखक कौन हैं?
2. 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी'का गठन किस क्रांतिकारी द्वारा किया गया था?
3. प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा का देहावसान भारत से बाहर कहाँ हुआ था?
4. क्रांतिकारी सिद्धो व कान्हु संथाल का जन्म झारखण्ड के किस ग्राम में हुआ था?
5. सांडर्स की हत्या का दोषी मानते हुए भगत सिंह, सुखदेव के साथ तीसरे क्रांतिकारी कौन थे जिन्हें फांसी दी गई?
6. लाहौर षड्यंत्र केस के सरकारी गवाह को यमलोक पहुँचाने वाले क्रांतिकारी कौन थे?
7. क्रांतिकारी विष्णु गणेश पिंगले को लाहौर में फांसी कब दी गई थी?
8. मास्टर अमीर चंद मूलतः कहाँ के रहने वाले थे?
9. अपने तीर-कमान के बल पर अंग्रेजों के 71 ठिकाने अपने कब्जे में लेने वाला जनजातीय वीर योद्धा कौन था?
10. वीर बिरसा मुंडा की जयंती को 'जनजातीय गौरव दिवस' कब घोषित किया गया?

उत्तर – पृष्ठ 15 पर

गोभक्तों के बलिदान का 56वां वर्ष

देश की राजधानी में जब सेकुलर सरकार ने गोभक्तों पर बरसाईं थी गोलियां

देश के लगभग सभी प्रदेशों से लाखों गोभक्त भारतीय संसद के सामने 7 नवम्बर, 1966 को विराट प्रदर्शन के लिए इस आशा और विश्वास के साथ एकत्र हुए थे कि केन्द्र सरकार हिंदू जन भावनाओं को ध्यान में रखते हुए गो हत्या निषेध कानून अवश्य पारित कर देगी। उस दिन गोभक्त शांतिपूर्ण तरीके से गोहत्या रोकने के नारे लगाते हुए अपने हाथों में गोरक्षा संबंधी तख्तियां लेकर देश भर के साधु-संतों के नेतृत्व में संसद की ओर बढ़ रहे थे। गोभक्तों को रोकने की कोशिश करते हुए पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को वापस जाने को कहा। नहीं मानने पर उन पर लाठियां बरसाना शुरू हो गया और जब सभी गोभक्त लाठियों के प्रहार से भी नहीं डिगे तो गोलियाँ बरसायी गईं। पलभर में ही बड़ी संख्या में गोभक्तों को गोलियों से भून डाला गया। बड़ी संख्या में लोग घायल हुए।

यह प्रदर्शन 'गोरक्षा महा अभियान समिति' की ओर से किया था। विश्व हिंदू परिषद का इस को पूर्ण समर्थन प्राप्त था। ऐसी नृशंस हत्या स्वतंत्र भारत में पहले कभी नहीं हुई थी। सरकारी आंकड़ों में उक्त घटना में बहुत कम लोगों की मृत्यु को दर्शाया गया था, जबकि पुरी के तत्कालीन शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ जी महाराज के अनुसार बड़ी संख्या में उस दिन गोभक्त बलिदान हुए थे। हजारों गोभक्त गिरफ्तार कर तिहाड़ जेल भेजे गए।

क्या था मामला

दरअसल, प्रसिद्ध संत स्वामी करपात्री जी महाराज पचास के दशक से लगातार गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक राष्ट्रीय कानून की मांग कर रहे थे। लेकिन केन्द्र सरकार इस पर कोई भी कानून लाने का विचार ही नहीं कर रही थी। इससे हिंदू समाज में व्याप्त आक्रोश लगातार बढ़ता जा रहा था और उसी की परिणीति थी दिल्ली में गोभक्तों की गूंज।

9 व 10 सितम्बर, 1952 को नागपुर में हुई संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में 2 प्रस्ताव पारित हुए थे। पहला प्रस्ताव स्वदेशी को लेकर तो दूसरा गोरक्षा-गोवध बंदी को लेकर था। देशभर में गोहत्या पर रोक लगाने की मांग को लेकर लगभग पौने 2 करोड़ लोगों का हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन राष्ट्रपति जी को सौंपा गया था।

इस घटना के बाद तत्कालीन गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा को त्याग पत्र देना पड़ा था। वे 'भारत साधु समाज' के अध्यक्ष भी थे। आज पूर्वोत्तर भारत के कुछ प्रांतों को छोड़ दें तो देश के लगभग सभी प्रांतों में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाया जा चुका है। ●

राजस्थान की अपनी भाषा में संवाद एवं विचार-अभिव्यक्ति

तन दिवलो मन बाती

● डॉ. भँवर कसाना

माटी रो अेक नान्हो सो दिवलो। उण मांय बाती अर तेल। घुप्प अंधेरी रात मांय टिमटिम करती लौ। बिकराल अंधेरे सूं जूंझतो दिवलो। किणी बखत-बायरी रै झौकां मांय जीवण री बाजी लगावतो दिवलो। दिवलै री जिती बातां बिताई मतलब। मिनख जमारो ई तो अेक दिवलै री ज्यूं ई है। जीया जूण री अबखायां मांय अेकलो जूंझै। अेकलो चायै मिनख हुवो चायै दिवलो, उण रो सगळो जीवण खींचाताणी मांय ई बीतै। उणा री इण खींचाताणी मांय त्याग, तपस्या अर बलिदान सोक्यूं है पण त्यावस री मुळक नीं है। त्यावस री मुळक कद आवै ? जद संप हुवै। संप चायै दिवलां रो हुवो चायै मिनखां रो, दोन्यां मांय ई दिवाळी है।

दिवाळी हरख-उमाव रो तिंवार है। आम जण रै सैयोग सूं आसुरी सगतियां रो नास करर भगवान श्रीराम रै पाछा घरै पधारण री याद रो तिंवार है दिवाळी। सगळै चौमासे खेतां मांय खपते करसां वास्तै खळां सूं फसलां नै आपरै घरां लावण रै पछै रै हरख रो तिंवार है दिवाळी। बिणज-बोपार मांय साल भर रो हिसाब किताब करर शुभ लाभ रै उमाव रो तिंवार है दिवाळी। इण दिन धन री देवी लिछमी री पूजा हुवै। गोवर्धन रै सागै गोधन री पूजा हुवै। दिवाळी अेकले रो नीं भेळप रो तिंवार है। इण दिन साल भर रा मनमुटाव भुलायर भाईचारे रा रामा-श्यामा हुवै।

दिवलां नै दिवाळी वास्तै आपरी अेकलखोरी छोडर भेळप री कतारां मांय जगमगावणो पड़ै तो मानखै नै ई जीवण मांय दिवाळी ल्यावण वास्तै रळमिलर काज करणो पड़ै। अेकलखोरी मांय खीज, हतासा अर डाह है तो भेळप मांय हरख ई हरख है। आज आपणै देस मांय नीं जाणै किता लोग जगां जगां भेळप रा दिवला बणर आप आपरै मोरचै माथै जूंझ रिया है। कोई सीमा माथै तो कोई खेत-खळां मांही। कोई बिणज बोपार मांही तो कोई कल-कारखाना मांही। कोई नूंवी नूंवी तकनीकां-तरकीबां मांही तो कोई नूंवी नूंवी खोजां मांही। कोई साख बढ़ावण मांही तो कोई धाक बढ़ावण मांही। कोई देस जगावण मांही तो कोई देस उठावण मांही। सगळा आप आपरी रचना योजना सूं दलबल रै सागै लाग्योड़ा है। आं सगळां रै पाण ई आपणै अठै दिवाळी है। आं रै पाण ई दिवाळी गरब, गुमेज अर वैभव रो तिंवार है।

(लेखक राजस्थानी भाषा के साहित्यकार हैं)

रेखांकित शब्दों के अर्थ- **अबखायां**-कठिनाइयाँ, **खींचाताणी**-संघर्ष, **त्यावस**-संतोष, **मुळक**-मुस्कान, **संप**-संगठन, **हरख**-उमाव-हर्षोल्लास, **खपते**-उत्सर्ग करते, **करसां**-किसान, **खळां**-खलिहानों, **उमाव**-उल्लास, **भेळप**-संयुक्त, **अेकलखोरी**-अकेलापन, **डाह**-ईर्ष्या, **गुमेज**-गौरव।

विश्व के तीन देश हैं प्रदूषण रहित

प्रधानमंत्री मोदी ने 2070 तक भारत को भी प्रदूषण रहित करने की कर रखी है घोषणा

प्रदूषण से तात्पर्य है कार्बन डाइऑक्साइड व इस जैसी अन्य जहरीली गैसें जिन्हें ग्रीन हाउस गैस कहा जाता है, का हवा में उपस्थित रहना। इन गैसों की जितनी ज्यादा मात्रा हवा में होगी, मानव व पशु-पक्षियों को सांस लेने में उतना ही ज्यादा कष्ट होगा। मानव सांस लेता है तो आक्सीजन, जिसे प्राण वायु कहा जाता है, अपने अंदर रख लेता है, और कार्बन डाईऑक्साइड बाहर निकालता है। पेड़-पौधे इस कार्बन डाईऑक्साइड को ग्रहण करते हैं तथा आक्सीजन बाहर निकालते हैं। यानि जितने ज्यादा पेड़-पौधे होंगे, हवा में जहरीली गैसें उतनी ही कम होंगी। फैक्ट्री, वाहन, फ्रिज, एसी आदि से भी लगातार जहरीली गैसें निकलती रहती हैं। इस प्रदूषण को रोकने का उपाय है कि जहरीली गैसों का उत्सर्जन (निकास) कम से कम हो तथा ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे-जंगल हों। अन्यथा तो, प्रदूषण से पूरी सभ्यता को खतरा पैदा हो गया है।

शून्य प्रदुषण वाले देश

विश्व में भूटान, सूरीनाम तथा पनामा ऐसे तीन देश हैं जहां प्रदूषण की मात्रा शून्य है। भूटान में जमीन का 72 प्रतिशत जंगल है। ये जंगल एक वर्ष में 90 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित (ग्रहण) करते हैं जबकि कार्बन का उत्सर्जन मात्र 40 लाख टन से भी कम होता है। इसी तरह सूरीनाम में भूमि का 97 प्रतिशत भाग तथा पनामा देश में भूमि का 57 प्रतिशत भाग जंगलों से ढका हुआ है। इस कारण वहां भी प्रदूषण शून्य है।

भारत भी शून्य प्रदूषण के रास्ते पर

ग्लासगो में सन् 2021 में हुए 'संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन' (COP-26) में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने घोषणा की थी कि 2070 तक भारत को भी शून्य कार्बन उत्सर्जन अर्थात् प्रदूषण मुक्त करेंगे। यह तभी संभव होगा जब शासन-प्रशासन के साथ ही उद्योगपतियों तथा समाज के सभी लोगों द्वारा इस दिशा में प्रयत्न किया जाएगा अर्थात अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाना, जंगलों का संरक्षण करना और प्रदूषण वाली गैसों का कम से कम उत्सर्जन करना।

ज्यादा आक्सीजन देने वाले तथा जहरीली गैस सोखने वाले पेड़ पौधे

मानव जीवन का प्रतिदिन का अधिक समय घर/कार्यालय में व्यतीत होता है। इस संदर्भ में इन बंद परिवेशों में भी वायु प्रदूषण को कम करने के लिए कुछ प्रभावी पौधे वैज्ञानिकों द्वारा पहचाने गये हैं। घरों और कार्यालय में इन पौधों को लगाकर हम व्यक्तिगत स्वास्थ्य सुरक्षा और सौन्दर्यीकरण के साथ-साथ सम्पूर्ण वायुमंडल में भी वायु प्रदूषण नियंत्रण करने में अपना योगदान दे सकते हैं। ये पौधे हैं-

1. बैम्बू पाम-

यह पौधा हवा में उपस्थित फार्मेल्डिहाइड जैसी जहरीली गैस को सोख लेता है।

2. स्नेक पाम-

यह पौधा भी घर के अंदर उपस्थित जहरीली गैसों नाइट्रोजन आक्साइड और फार्मेल्डिहाइड को सोख लेता है।

3. अरेका पाम-

यह पौधा वायु को शुद्ध करने वाले सर्वोत्तम पौधों में माना जाता है।

4. स्पाइडर प्लान्ट-

यह पौधा कार्बन मोनो ऑक्साइड तथा फार्मेल्डिहाइड गैस को हटाता है।

5. पीस लिली-

इसे 'क्लीन ऑल' भी कहा जाता है। सफेद फूलों वाला यह पौधा फार्मेल्डिहाइड व ट्राइक्लोरोपिलीन आदि जहरीली गैसों का दुस्प्रभाव हटाता है।

6. जरबेरा डेजी-

पीले रंग के फूलों वाला यह पौधा पर्यावरण में उपस्थित बैंजीन गैस का दुष्प्रभाव दूर करता है।

खुले में लगाये जाने वाले उपयोगी पेड़-

वायुमंडल को शुद्ध करने के लिए ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने और कार्बनडाईऑक्साइड को कम करने में सर्वाधिक प्रभावी पेड़ इस प्रकार है-

पंचवटी समूह के पेड़-

1. पीपल 2. बिल्व 3. बरगद 4. आंवला 5. अशोक

अन्य पेड़-

6. नीम का पेड़ 7. अर्जुन 8. जामुन

क्रांतिकारी विचारों के जनक
विपिन चन्द्र पाल

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में लाल-बाल-पाल की तिकड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है, जिन्होंने बंगाल विभाजन के समय अपने क्रांतिकारी विचारों से स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। इस तिकड़ी में विपिन चन्द्र पाल एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी क्रांतिकारी भूमिका निभाई बल्कि समाज सुधारक, शिक्षक, पत्रकार, उच्च कोटि के लेखक व कुशल वक्ता के गुणों का भी निर्वहन किया।

भारत में सशक्त स्वदेशी आंदोलन की नींव रखने वाले इस क्रांतिकारी को लोग 'बंगाल टाइगर' के उपनाम से भी संबोधित करते हैं। क्रांतिकारी विचारधारा को पल्लवित करने वाले इस स्वतंत्रा सेनानी का जन्म 7 नवम्बर, 1858 को सिल्हेट जिले के पोइली गांव में हुआ था, जो वर्तमान में बांग्लादेश में स्थित है।

समाज सुधारक– विपिन चन्द्र ने रूढ़ीवादी मान्यताओं और जाति व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाते हुए स्वयं एक उदाहरण बनकर एक विधवा से विवाह किया। पारिवारिक व सामाजिक दबाव के बाद भी उन्होंने अपने विचारों के साथ कोई समझौता नहीं किया।

स्वदेशी प्रेरणा– विपिन ने देशवासियों को यह विचार दिया कि विदेशी उत्पादों की वजह से देश की अर्थव्यवस्था खराब हो रही है और बेरोजगारी बढ़ रही है। अतः विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें और स्वदेशी चीजों का प्रयोग करें।

भारतीय जनमानस के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन को घर-घर तक पहुँचा कर भारतीयों को स्वदेशी मिलों के द्वारा बने हुए कपड़े पहनने को प्रेरित किया व विदेशी कपड़ों की होली जलवाई। वे सदैव पूर्ण स्वराज, स्वदेशी, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के पक्षधर रहे।

निर्भीक पत्रकार– क्रांतिकारी पत्रिका वंदेमातरम् का संपादन कार्य करते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध हमेशा मुखर रहे। उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से भारत में क्रांतिकारी विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया। इसके अलावा उन्होंने विदेश में 'स्वराज', 'अमृत बाजार', भारत में 'द हिंदू रिव्यु' 'द डैमोक्रेट'(बंगाली) जैसी अनेक

पत्र-पत्रकारिताओं के माध्यम से देश भाव का जागरण किया।

स्वराज– वे गांधी जी के बजाय लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा महर्षि अरविंद के दर्शन व कार्यों से ज्यादा प्रभावित थे। ब्रिटिश सरकार के प्रति गांधी जी के रवैये से वे असहमत थे। उनका मानना था कि मात्र दया-याचना की नीति से भारत को स्वराज नहीं मिल सकता। **बंगाल विभाजन** के विरोध में हुए आंदोलन के वे अगुआ नेताओं में से थे। इंग्लैण्ड जाने पर वे क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित 'इंडिया हाउस' से जुड़ कर वहां से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए चले रहे क्रांतिकारी प्रयासों में सक्रिय रहे।

कारावास– 1906 में उन्हें वंदेमातरम् पत्र में उनके द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध जनमत तैयार करने और अरविंद घोष पर राजद्रोह के मुकदमे में उनके विरुद्ध गवाही नहीं देने के कारण 6 माह का कारावास भुगतना पड़ा। जेल से रिहा होने पर उन्होंने अपना आंदोलन और तेज कर दिया।

जीवन भर राष्ट्रहित हेतु काम करते हुए भारत माता का यह सपूत 20 मई, 1932 को सदा के लिए विदा हो गया। भारत सरकार ने विपिन चन्द्र पाल की स्मृति में वर्ष 1958 में डाक टिकट जारी किया। ●

– मनोज गर्ग

सांवलिया धाम (चित्तौड़)

भारत के 'स्व' को पहचानना होगा

स्वाधीनता के दशक बीत जाने के बाद भी हम गुलामी की मानसिकता से नहीं निकले, हमें इससे निकलकर भारत के 'स्व' को पहचानना होगा और स्वाधीन भारत का अभिमानी नागरिक बनना होगा। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर हर घर तिरंगे का उद्देश्य भी यही था। यह कहना है राष्ट्र सेविका समिति की राष्ट्रीय सदस्य माधुरी ताई का। वे सांवलिया धाम (चित्तौड़) में 16 अक्टूबर को आयोजित राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के एक दिवसीय महिला सम्मेलन को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की महती भूमिका है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि दीप्ती माहेश्वरी ने कहा कि महिलाएं ही हैं, जो विषम परिस्थितियों में भी कार्य को अंजाम देने में हिचकती नहीं है। यह उनकी शक्ति है। सम्मेलन में बड़ी संख्या में मातृ-शक्ति ने सहभाग किया।

श्रीगंगानगर

विद्या मंदिर की राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता

विद्या भारती द्वारा संचालित विद्या मंदिरों की राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता बीते दिनों 14-16 अक्टूबर के मध्य आदर्श विद्या मंदिर घड़सीसर रोड, गंगाशहर में सम्पन्न हुई। इस दौरान लम्बी कूद, भाला फेंक, गोला फेंक, तश्तरी, तारगोला फेंक, पैदल चाल प्रतियोगिता रखी गई थी। प्रतियोगिता में गंगाशहर विद्यालय की स्नेहा चौधरी ने गोला फेंक में प्रथम, कविता व अंकिता कड़वासरा ने पैदल चाल में, सरिता मेहरिया ने क्रॉस कंट्री (प्रथम) तथा दीपिका चौधरी ने हेमर थ्रो में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में राजस्थान के तीनों प्रांत के 250 से अधिक विद्यार्थी खिलाड़ियों ने भाग लिया। जानकारी हो कि बालकों को मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक क्षमता युक्त बनाने हेतु विद्या भारती 1989 से उक्त प्रतियोगिताओं का प्रतिवर्ष आयोजन करा रही है। इस बार यह 33वां आयोजन था। प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को विद्या भारती, राजस्थान के संगठन मंत्री श्री शिवप्रसाद ने पुरस्कार प्रदान किए।

भारत विकास परिषद द्वारा देशभक्ति गीतों की राष्ट्रीय प्रतियोगिता

सेवा भावी संगठन भारत विकास परिषद प्रतिवर्ष देशभर में अंतर-विद्यालय 'राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता' का आयोजन करता है। प्रारम्भिक स्तर पर विजयी टीम प्रांतीय प्रतियोगिता में भाग लेती है। वहां विजयी टीम राष्ट्रीय स्तर पर जाती है। इसी कड़ी में बीती 6 अक्टूबर को जयपुर की **विजय नगर शाखा** द्वारा रखी गई प्रतियोगिता में एन के पब्लिक स्कूल, आर्य नगर, मुरलीपुरा की टीम प्रथम रही।

भाविप की **जयपुर इकाई** द्वारा 'भारत को जानो' प्रतियोगिता भी करायी गई जिसमें 18 विद्यालयों के 5700 विद्यार्थियों ने भाग लिया। महानगर शाखा द्वारा मानसरोवर (जयपुर)स्थित इंडिया इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित प्रतियोगिता में वैशाली नगर की टैगोर पब्लिक स्कूल प्रथम, डीएवी पब्लिक स्कूल,वैशाली नगर तथा इंडिया इंटरनेशनल स्कूल, मानसरोवर दूसरे और तीसरे स्थान पर रही। प्रतियोगिता में शहर के 7 विद्यालयों ने सहभाग किया। इस इकाई द्वारा गो सेवार्थ 'भारत सेवा संस्थान' को 50 हजार रुपए भेंट करने का समाचार भी मिला है।

जयपुर

हिंदू जागरण मंच कार्यशाला

हिंदू जागरण मंच, जयपुर प्रांत की प्रचार आयाम कार्यशाला बीते दिनों पाथेय भवन में आयोजित की गई। कुल तीन सत्रों में सोशल मीडिया, साइबर गतिविधि, इंटरनेट, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि के प्रति सावधानी पर चर्चा की गई। मंच के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री कमलेश सिंह की इस दौरान उपस्थित थे।

अजमेर

चल चिकित्सा का शुभारम्भ

सेवा भारती समिति, अजमेर महानगर द्वारा लोहार बस्ती में चल चिकित्सा प्रकल्प की शुरुआत की गई। इसके अंतर्गत प्रथम शिविर में एनएमओ के चिकित्सकों द्वारा 70 रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा परामर्श व दवा का वितरण किया गया। सेवा भारती को चल चिकित्सा वाहन केन्द्रीय मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव द्वारा भेंट किया गया है।

अलवर

एससी, एसटी वर्ग की छात्राओं के सामने नग्न होकर रेप की दी धमकी

अलवर जिले के शेखपुरा थानातंर्गत एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। वहां मदरसे के एक युवक नूरदीन ने कपड़े उतार कर नग्न अवस्था में खड़े होकर उधर से जा रही एससी-एसटी की स्कूली छात्राओं का रास्ता रोक लिया और छात्राओं से शारीरिक संबंध बनाने जैसी अश्लील बातें बोलने लगा तथा ऐसा न होने पर कत्ल की धमकी भी देने की बात सामने आई है। डरी सहमी छात्राओं ने भागकर अपने घर परिजनों को इस घटना से अवगत कराया।

गुस्साए ग्रामीण आरोपी नूरदीन के गांव पहुंचे जहां छात्राओं ने मस्जिद में आरोपी को पहचान लिया। बाद में ग्रामीणों ने शेखपुरा थाने में मामला दर्ज कराया। पुलिस ने एससीएसटी एक्त तथा पोक्सो एक्ट के अंतर्गत मामला दर्ज किया है।

जयपुर

घुमंतू जातियों के कल्याण में लगे कार्यकर्ताओं का वर्ग

घुमंतू जाति उत्थान न्यास पिछले कई वर्षों से घुमंतू जातियों के बच्चों को अच्छी शिक्षा व जीवन स्तर देने के लिए कार्य कर रहा है। इस कार्य में लगे कार्यकर्ताओं का दो दिवसीय अभ्यास वर्ग 2-3 अक्टूबर को जयपुर में लगाया गया। राजस्थान में कुल 32 जातियां घुमंतू, अर्द्ध घुमंतू या विमुक्त समुदाय के रूप में सूचीबद्ध हैं। इनमें गाडिया लुहार, सिकलीगर, बंजारा, रैबारी,कंजर, बावरी, सांसी, जोगी, सींगीकाढ़ा, सपेरे, नट आदि शामिल हैं।

राजस्थान क्षेत्र के सामाजिक समरसता कार्य प्रमुख श्री तुलसीनारायण ने इस अवसर पर कहा कि घुमंतू समाज देशभक्त व स्वाभिमानी हैं, परंतु आज दो समय का भोजन व बुनियादी आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहा है। इन घुमंतू जातियों के बंधु भी समाज की मुख्य धारा से जुड़े इसके लिए हम सबको प्रयास करना चहिए।

राजस्थान के दो प्रांतों में घुमंतू कार्य प्रमुख श्री महेन्द्र सिंह ने बताया कि इन समुदायों का बड़ा वर्ग घुमक्कड़ व बेघर होता है जो समूह में छोटे अंतराल के बाद अपना स्थान बदलता रहता है। इन जातियों के पास अपने पूर्वजों से मिला अनुभवजन्य अथाह ज्ञान है तथा ये किसी न किसी कला या कारीगरी में सिद्धहस्त हैं। इस समाज का अधिकांश भाग आज भी शिक्षा से वंचित है तथा रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी आवश्कताओं के लिए संघर्ष कर रहा है।

नाहरगढ़ (बारां)

अब्दुल कलाम जयंती पर प्रश्नोत्तरी

आदर्श विद्या मंदिर, नाहरगढ़ (बारां) द्वारा भारत के महान वैज्ञानिक व पूर्व राष्ट्रपति डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम जयंती 'विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर डॉ.कलाम की जीवनी पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी उत्तर-1. सुभाष चन्द्र बोस 2. चन्द्रशेखर आजाद 3. जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड) 4. भगनाडीह 5. शिवराम राजगुरु 6. वैकुंठ नाथ शुक्ल 7. 16 नवम्बर,1915 8. दिल्ली 9. भीमा नायक 10. 15 नवम्बर, 2021

गीता दर्शन

श्रीकृष्ण कहते हैं–

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते।। (5/3)

हे अर्जुन ! जो पुरुष न किसी से द्वेष करता है और न किसी की आकांक्षा करता है, वह कर्मयोगी सदा संन्यासी समझने योग्य है, क्योंकि राग–द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित व्यक्ति सुखपूर्वक संसार बंधन से मुक्त हो जाता है।

कुकिंग टिप्स

● भटूरे बनाते समय मैदा में आवश्यकतानुसार सूजी मिलाने से भटूरे बेलने में आसानी होती है और वे सॉफ्ट भी बनते हैं।

घरेलू नुस्खा

एड़ियों का दर्द होने पर 50 एमएल सरसों के तेल में आधा चम्मच हल्दी, 3–4 लहसुन की कली, थोड़ा सादा नमक डालकर पका लें। इस तेल को छान कर रात में सोते समय मालिश करने से दर्द में राहत मिलती है।

आओ संस्कृत सीखें - 10

हिन्दी	संस्कृत
● कृपया पुस्तक दीजिये।	– कृपया पुस्तकं ददातु।
● मेरी बात सुनिये।	– मम वचनं शृणोतु।
● क्यों इतनी देर हुई?	–किमर्थम् एतावान् विलम्बः?
● भोजन तैयार है।	–भोजनं सिद्धम्।

गौरव का क्षण

- स्वदेशी तकनीक से निर्मित जमीनी व पहाड़ी लड़ाई के लिए सबसे घातक हेलिकॉप्टर 'प्रचण्ड' वायु सेना को समर्पित।
- मिश्र में हुए विश्व निशानेबाजी चैम्पियनशिप में महाराष्ट्र के रुद्राक्ष पाटिल ने स्वर्ण पदक जीता। अभिनव बिंद्रा के बाद पाटिल भारत को गौरव दिलाने वाले दूसरे भारतीय हैं।
- जालंधर की फलक बिदानी ने इटली में हुए विश्व स्तरीय किक बॉक्सिंग चैम्पियनशिप में सिल्वर मैडल जीता।
- स्पेन में आयोजित अंडर–23 विश्व कुश्ती चैपिंयनशिप, 2022 में साजन मानवाला ने ग्रीको–रोमन पदक अपने नाम किया। यह उपलब्धि प्राप्त करने वाले वे पहले भारतीय है। इसी प्रतियोगिता में भारत के नितेश ने 97 किग्रा वर्ग में तथा विकास ने 72 किग्रा वर्ग में कास्य जीता।

मोबाइल का नशा
सुनिए कि डाक्टर क्या कहते हैं?

जो माता–पिता छोटे मासूम बच्चों को रोने पर उनके हाथ में मोबाइल देकर शांत कराते हैं वह बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। वे अपने बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। यह कहना है वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डा.एल के तिवारी का।

उन्होंने यह भी कहा कि 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए मोबाइल का उपयोग बहुत ही घातक होता है। इससे बच्चों में चिड़चिड़ापन व स्वभाव में जिद्दीपन आता है। वे माता–पिता को ब्लैक मेलिंग करने लगते हैं तथा लत लग जाने पर जब उन्हें मोबाइल से दूर रखा जाता है तो वे डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं।

पहले करते थे 92% मोबाइल आयात, अब 97% बनते हैं भारत में ही

वर्ष 2014 (मोदी सरकार) से पहले भारत में उपयोग किए जाने वाले मोबाइल 92% देश के बाहर से मंगाए जाते थे। अब 97% मोबाइल देश में निर्मित किए जा रहे हैं। आज भारत से लगभग एक लाख करोड़ के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्यात किया जा रहा है। खिलौने चीन से मंगाना बंद कर भारत में ही बनाए जा रहे हैं।

26 नवम्बर

विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस

पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने एवं आमजन को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के संदर्भ में सकारात्मक कदम उठाने के लिए प्रतिवर्ष 26 नवम्बर को 'विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस' मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास कार्यक्रम के अंतर्गत इस दिवस की शुरुआत वर्ष 1992 में की गई थी।

संविधान दिवस

26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा औपचारिक रूप से भारत के संविधान को अपनाया गया जिसे आगे चलकर 26 जनवरी,1950 को लागू किया गया। प्रतिवर्ष देश में संविधान में निहित मूल्यों और सिद्धान्तों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए इस दिवस का आयोजन किया जाता है। इसे राष्ट्रीय विधि दिवस के रूप में भी जाना जाता है। केन्द्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने वर्ष 2015 में भारत सरकार द्वारा 26 नवम्बर को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाने के निर्णय को अधिसूचित किया था।

बोध कथा

संगत और सीख

एक सेठ अपने लड़के की बुरी संगत से बेहद दुखी था। सेठ ने उसे बहुत समझाया पर परिणाम कुछ नहीं निकला। परेशान सेठ उसे अपने गुरुजी के पास लेकर गया और उन्हें अपनी तकलीफ सुनाई।

गुरुजी ने सेठ के पुत्र का हाल-चाल पूछा और उसे साथ लेकर एक बाग में गए। वहाँ उन्होंने उसको विभिन्न प्रकार के पौधे दिखाए। उनमें एक पौधा एक फुट का था, दूसरा तीन फुट का, तीसरा छह फुट का और चौथा बारह फुट का था।

गुरुजी ने कहा, 'पहले पौधे को उखाड़कर दिखाओ।' लड़के ने पौधे को पकड़कर सहज ही उखाड़ लिया। गुरुजी बोले, 'अब तुम दूसरे पौधे को उखाड़कर दिखाओ।' लड़के ने उस पौधे को भी जोर लगाकर उखाड़ दिया। तीसरे पौधे को उखाड़ने में लड़के को दोनों हाथों से काफी खींच-तान करनी पड़ी।

गुरुजी ने कहा 'अब चौथे पौधे को भी उखाड़ कर लाओ' लड़के ने पौधे को दोनों हाथों से पकड़ा काफी जोर लगाया, पर वह नहीं उखड़ा।

लड़का बोला-' यह मुझसे नहीं उखड़ेगा।' तब गुरुजी ने कहा, बेटे जब हम किसी बुरी संगत में पड़ते हैं, तो शुरु में तो उसे दूर होना आसान होता है, लेकिन जब हम उस संगत को नहीं छोड़ते तो उसकी जड़ें बहुत गहरी हो जाती हैं, फिर उन्हें उखाड़ना मुश्किल हो जाता है। लड़का समझ गया और उसी दिन से उसने बुरे लोगों की संगत छोड़ दी।

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -28)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9. ( )
10.( )

नाम .....
पिता का नाम.....
उम्र ..... पूर्ण पता .....
.....
.....पिन.....
मोबाइल नं. .....

बाल प्रश्नोत्तरी -28

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 16 अक्टूबर का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 20 नवम्बर, 2022**

1. **गौरी शंकर पर्वत को आम भाषा में किस नाम से जाना जाता है?**
(क) माउंट एवरेस्ट (ख) माउंट आबू (ग) पार्वती शंकर पर्वत (घ) कंचनजंघा

2. **रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि की जयंती कब मनाई जाती है?**
(क) 12 अक्टूबर (ख) 11 अक्टूबर (ग) 10 अक्टूबर (घ) 9 अक्टूबर

3. **विजयादशमी पर तलवार और दण्ड का शौर्य प्रदर्शन मातृशक्ति ने कहाँ किया था?**
(क) जयपुर (ख) पाली (ग) उदयपुर (घ) जालोर

4. **प्रसिद्ध सिद्ध शक्तिपीठ अंबाजी में माता की किस रूप में पूजा होती है?**
(क) मस्तक (ख) आंख (ग) श्रीयंत्र (घ) शंख

5. **51 शक्तिपीठों में एक अंबाजी शक्ति पीठ किस राज्य में स्थित है?**
(क) गुजरात (ख) राजस्थान (ग) पंजाब (घ) महाराष्ट्र

6. **अंडमान-निकोबार के किस स्थान पर जनजातीय नायकों की प्रदर्शनी व सेमिनार का आयोजन हुआ?**
(क) फरारगंज (ख) पोर्ट ब्लेयर (ग) दक्षिण अण्डमान (घ) निकोबार

7. **अयोध्या में भव्य मंदिर निर्माण हेतु कारसेवा कब प्रारंभ की गई थी?**
(क) 30 अक्टूबर,1990(ख) 30 अक्टूबर,1992(ग) 30 अक्टूबर,1993 (घ)30 अक्टूबर,1995

8. **राममंदिर हेतु गांव-शहरों में रामशिला पूजन किस वर्ष प्रारम्भ हुआ था?**
(क) वर्ष 1989 (ख) वर्ष 1985 (ग) वर्ष 1987 (घ) वर्ष 1990

9. **श्रीराम जन्मभूमि पर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक निर्णय कब आया था?**
(क) नवम्बर 2019 (ख) दिसम्बर 2019 (ग) जनवरी 2019 (घ) फरवरी 2019

10. **नागपुर में आयोजित संघ के विजयादशमी उत्सव की मुख्य अतिथि कौन थीं?**
(क) अनिता यादव (ख) संतोष यादव (ग) सुनीता यादव (घ) संगीता यादव

बाल प्रश्नोत्तरी -25 के परिणाम

संदीप

प्रेम

सेजल

लोकेन्द्र

रेखा

1. संदीप शर्मा, दुजोद, सीकर
2. प्रेम चौधरी, सनावड़ा, बाड़मेर
3. सेजल कोठारी, कांकरोली,राजसमंद
4. लोकेन्द्र कड़वासरा, जायल, नागौर
5. रेखा स्वामी, फलौदी, जोधपुर
6. साहित्य गर्ग, खेरली, अलवर
7. सीमा विश्नोई, धोरीमन्ना, बाड़मेर
8. तनु कंवर, छोटी खाटू, नागौर
9. रेणु कुमारी, आसीन्द, भीलवाड़ा
10. गर्वित नेहरिया, उदयपुर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर 1.(क) 2.(घ) 3.(ग) 4.(ख) 5.(क) 6.(घ)7.(ख) 8.(ख) 9.(ग)10.(ख)

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(16 से 30 नवम्बर, 2022)
(मार्गशीर्ष कृ. 8 से मार्गशीर्ष शुक्ल 7, वि.सं. 2079)

जन्म दिवस

19 नवम्बर (1828) – महारानी लक्ष्मीबाई जयंती
19 नवम्बर (1914) – एकनाथ रानडे जयंती
19 नवम्बर (1917) – भाऊराव देवरस जयंती
23 नवम्बर (1901) – गोविंद राव कात्रे जयंती
26 नवम्बर (1892) – लाला हरदेव सहाय जयंती
28 नवम्बर (1885) – क्रांतिकारी भाई हिरदाराम जयंती
29 नवम्बर (1869) – ठक्कर बापा जयंती
30 नवम्बर (1858) – वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु जयंती
मार्गशीर्ष शु. 7 (30 नवम्बर)– नरसी मेहता जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

16 नवम्बर (1915) – विष्णु गणेश पिंगले तथा करतार सिंह सराबा सहित सात क्रांतिकारियों की शहादत
17 नवम्बर (1928) – लाला लाजपत राय की शहादत
21 नवम्बर (1908) – सत्येन्द्र नाथ बसु की शहादत
मार्गशीर्ष कृ.12 (21नवम्बर)– राष्ट्र सेविका समिति की संचालिका लक्ष्मीबाई केलकर 'मौसीजी' की पुण्यतिथि
28 नवम्बर (1967) – सेनापति पांडुरंग महादेव बापट का निधन

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

19 नवम्बर (1668) – कोंकण (गोवा) के सप्त कोटिश्वर मंदिर का शिवाजी द्वारा जीर्णोद्धार प्रारंभ
26 नवम्बर – विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस
26 नवम्बर – राष्ट्रीय विधि दिवस
26 नवम्बर – संविधान दिवस

सांस्कृतिक पर्व

मार्गशीर्ष शु. 5 (28 नवम्बर)– श्रीराम जानकी विवाहोत्सव

पंचांग- मार्गशीर्ष (कृष्ण-पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944
(9 से 23 नवम्बर, 2022)

रोहिणी व्रत (जैन)-10 नवम्बर, **चतुर्थी व्रत**-12 नवम्बर, **श्री काल भैरवाष्टमी**-16 नवम्बर, **उत्पत्ति एकादशी व्रत**-20 नवम्बर, **सोम प्रदोष व्रत**-21 नवम्बर, **देवपितृ कार्य अमावस्या**-23 नवम्बर

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 9 नवम्बर **मेष** राशि में, 10-11 नवम्बर उच्च की राशि **वृष** में, 12 से 14 नवम्बर तक **मिथुन** राशि में,15-16 नवम्बर स्वराशि **कर्क** में, 17-18 नवम्बर सिंह राशि में, 19 से 21 नवम्बर तक **कन्या** राशि में तथा 22-23 नवम्बर **तुला** राशि में गोचर करेंगे।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में **वक्री गुरु** व **शनि** क्रमशः यथावत मीन व मकर राशि में स्थित रहेंगे।

इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **वक्री मंगल** 13 नवम्बर को रात 8.41 बजे मिथुन से वृष राशि में प्रवेश करेंगे।

सूर्य 16 नवम्बर को सायं 7.15 बजे तुला से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 13 नवम्बर को रात 9.20 बजे तुला से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे तथा **शुक्र** भी 11 नवम्बर को रात 8.09 बजे तुला से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे।

शतशत नमन

जन्म दिवस

विवेकानन्द शिलास्मारक के शिल्पी
एकनाथ रानडे
19 नवम्बर

(1914-1982)

झांसी की वीरांगना
महारानी लक्ष्मीबाई
19 नवम्बर

(1828-1858)

जनजातीय लोगों के उत्थानकर्ता
ठक्कर बापा
29 नवम्बर

(1869-1951)

पुण्यतिथि

पंजाब केसरी
लाला लाजपत राय
17 नवम्बर

(1865-1928)

केरल

मुस्लिम महिला डॉ. सलमा संघ के विजयादशमी उत्सव को मुख्य अतिथि के नाते संबोधित करते हुए (केरल के पलक्कड़ जिले के पत्ताम्बी कस्बे में आयोजित कार्यक्रम)

सीकर

जयपुर

जयपुर के भारती भवन में संस्कृत मासिक पत्रिका के कार्यालय उद्घाटन के अवसर पर बाएं से क्रमशः क्षेत्र प्रचारक निम्बाराम जी, अ.भा. गोसेवा प्रमुख शंकरलाल जी, अ.भा. सह शारीरिक शिक्षण प्रमुख जगदीशप्रसाद जी, क्रीड़ा भारती के अ.भा. संगठन मंत्री प्रसाद महानकर जी एवं प्रबंध संपादक सुदामा जी।

जोधपुर

विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल द्वारा देचू (जोधपुर) में 16 अक्टूबर को आयोजित विशाल त्रिशूल दीक्षा समारोह में उपस्थित कार्यकर्ता

जम्मू

विजयादशमी पर किश्तवाड़ (जम्मू) में संघ के एक हजार स्वंयेसवकों ने शस्त्र पूजन के बाद निकाला पथ संचलन

बगड़ (झुंझुनू)

विहिप के केंद्रीय मार्गदर्शक मंडल सदस्य महामंडलेश्वर स्वामी अर्जुन दास जी महाराज द्वारा विजयादशमी पर बगड़ (झुंझुनू) में विशाल भगवा वाहन रैली का शुभारंभ

पखवाड़े का कथन

दुनिया में कठिन आर्थिक अंधकार के बीच एक चमकता हुआ सितारा है भारत। ऐसे कठिन समय में भी भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि यह विकास ढांचागत सुधार पर टिका है।

–क्रिस्टलीना जॉर्जिएवा
एमडी–अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष
(वाशिंगटन– 13 अक्टूबर,2022)

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 नवम्बर, 2022
(26 अक्टूबर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

Where service is a way of life

पीएसबी - अपना घर

PSB UniC
You & I Connected
Mobile & Internet Banking Solution

8.13%* वार्षिक
ब्याज दर

शुन्य
प्रोसेसिंग
शुल्क

30 साल
भुगतान
अवधी

₹ 743/-
मासिक किस्त / लाख

* नियम एवं शर्तें लागू

https://punjabandsindbank.co.in APPLY NOW

1800 419 8300 (टोल फ्री)

हमारा अनुसरण करें @PSBIndOfficial

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 नवम्बर, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,